शेख़ फ़रीद – सबद ९२

फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिअ नई वहंन्हि ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८२

फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिअ नई वहंन्हि ॥
जो जो वंञैं डीहड़ा सो उमर हथ पवंनि ॥८९॥

सार: जब खजूर का फल पक जाता है तब उसकी मिठास सहज ही उभर आती है जो प्राकृतिक प्रक्रिया को दर्शाती है। इसी तरह, जब चिंतन और स्पष्टता के माध्यम से सर्वव्यापी स्रोत के प्रति हमारी जागरूकता गहन होती है, तब गहरी अंतर्दृष्टि सहजता से प्रवाहित होने लगती है। यह अंतर्दृष्टि शहद की धाराओं के समान होती है, पोषक और समृद्ध। यह रूपक ऐसे परिवर्तनकारी चरण को दर्शाता है जहाँ हमारी समझ बिखराव और ज़ोर-ज़बरदस्ती से ऊपर उठकर ऐसी उदार शक्ति बन जाती है जो हमारे और दूसरों के लिए ज्ञान और स्पष्टता का प्रकाश फैलाती है। ऐसी परिपक्वता आध्यात्मिक बोध के शिखर का प्रतीक है जो अस्तित्व के गहन सार को उजागर करती है।

फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिअ नई वहंन्हि ॥
फ़रीद कहते हैं कि जब उस सर्वव्यापी स्रोत की समझ अपने चरम पर पहुँच जाती है तब पकी हुई खजूर के फल की तरह, अंतर्दृष्टि शहद की धारा की तरह समृद्ध मात्रा में सहज बहने लगती हैं। यह आध्यात्मिक अनुभूति के उस शिखर को दर्शाता है जो अस्तित्व के सार को समृद्धता प्रदान करता है।

जो जो वंञैं डीहड़ा सो उमर हथ पवंनि ॥८९॥
हर दिन जो बीतता है, जीवन-अवधि का केवल उतना ही हिस्सा हमारे हाथों में रह जाता है। यह समय की अमूल्यता और अवसरों की क्षणभंगुरता को उजागर करता है। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम जीवन के सार को अपनाएँ और उसे सहेजकर रखें। (८९)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर दिलाते हैं कि हर गुज़रते दिन के साथ, हमारे जीवन और अवसरों का एक हिस्सा धीरे-धीरे हमारे हाथों से फिसल जाता है। जहाँ एक ओर आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि अनंत रूप से प्रवाहित होती रहती हैं, वहीं दूसरी ओर मानवीय अस्तित्व धीरे-धीरे क्षीण होता जाता है जिससे उन्हें ग्रहण करने की हमारी क्षमता भी कमज़ोर पड़ती जाती है। सूर्योदय का हर पल न केवल एक नया दिन लेकर आता है बल्कि उन अवसरों को भी अपने साथ ले जाता है जो फिर कभी लौटकर नहीं आते। अतः यह हमारा दायित्व बन जाता है कि अपने कल्याण के लिए, हम अभी और इसी क्षण जीवन के इस सार को सहेजकर रखें।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com